नरेन्द्र शर्मा कृत 'द्रौपदी' खंडकाव्य में प्रतीकात्मकता

डॉ. भारमल पी. कणबी
एसोसिएट प्रोफेसर
(हिन्दी विभाग)
श्री यु.एच.चौधरी विनियन कॉलेज, वडगाम, बनासकांठा

भूमिका

कवि नरेन्द्र शर्माने अपने लघु खंडकाव्य 'द्रौपदी' में अपना व्यापक आध्यात्मक द्रष्टिकोण प्रतीक पद्धति में प्रस्तुत किया है । महाभारत के पात्र परम्परागत लोकमानस में विचारधाराओं के विशेष प्रतीक रहे है। जैसे युधिष्ठिर से शान्ति और धीरता की प्रेरणा मिलती है । अर्जुन से प्रचंड तेज की । द्रौपदी अपनी उग्र ओजस्विता से सुप्त पौरुष को उदेप्त करनेवाली अद्वितीय वीरांगना है । धृतराष्ट्र के पुत्र अपनी दुर्नीति, क्रुरता और मदान्धाता के प्रतीक के रुप में उद्धत हुए है । भारतीय जन-जीवन की धारा और सांस्कृतिक भागीरथी में ये पात्र परम्परा से ही दैवी और आसुरी विचारों के वाहक होने के कारण विशिष्ट प्रतीक के रुप में लोकविख्यात रहे है, प्राय: प्रतीक पद्धति द्वारा सुक्ष्म विचारों को स्पष्ट एवं अनुभवगम्य रुप देने के लिए उन विचारों के अनुरुप उन्हे स्थूलता भी प्रदान की जाती है । स्थूलता और मांसलता से ये सुक्ष्मविचार तत्वों के प्रतीक बनकर यहां प्रस्तुत किये हैं । इन लौकिक पात्रों के माध्यम से जीवन का मर्म दर्शन ही यहां प्रस्फुटित नहीं हुआ, अपितुं उन पात्रों को प्रतीक रुप में प्रस्तुत कर सृष्टि-यज्ञ की कथा मनोहारिणी शैली में चित्रित की गई हैं ।

आध्यात्मिक द्रष्टिकोण का आधार

'द्रौपदी' प्रतीकात्मक कथाकाव्य का आधार कवि को महाभारत में ही बीजरुप में प्राप्त हुआ है । उद्योग पर्व में सन्धि विषयक वार्ता के संदर्भ में धृतराष्ट्र ने अपने कुमार्गगामी पुत्रों को उपदेश देते हुए पांच पांडवों की तुलना पांच महातत्वों से की है । नि:संदेह यज्ञकुंड से जन्मी होमकुमारी द्रौपदी की प्रचण्ड जीवन-शक्ति ने उन पांच महा तत्वों को संश्किष्ट कर अपने स्व्तत्व और सत्ता को भी प्राप्त करने के लिए अपार शक्ति से उत्पन्न तेज से प्रकाशित कर दिया । नारायणी द्रौपदी पांडव-रुप नर में शक्ति की ज्योति भरने लगी और इस धर्मयुद्ध में नारायण कृष्ण नर के सारथी बने । विजयरथ पर यात्रा करते पांडवों का वर्णन करते हुए वैशम्पायन ने जनमेजय को भी सम्बोधित इस प्रकार किया था ।

"वे पंच रथमास्थाय भ्रातर: समलंकृता: ।
भूतानीव समस्तानि राजन् यद्दशिरे तदा ॥" (१)

है राजन् । रथ में बैठे हुए और अलंकारों से सुसज्जित वह पांचो भाईए पांच महातत्वों के समान दिखाई देते हैं ।

जीवन की उदात्त प्रेरणा, लुप्त स्वत्व और सत्वों को प्राप्त करने का सख्त उद्योग और उस खोई सत्ता की प्राप्ति की लौकिक कथा-धारा के मूल में पांच महातत्वों की संपूर्ण विकासशील प्रक्रिया फल्गु नदी की गुप्त धारा के अनुरुप बीज के रुप में वर्तमान है ।

कवि नरेन्द्र शर्मा ने द्रौपदी काव्य के आधार पर नारी क उच्च एवं आदरणीय धरातल पर प्रतिष्टित किया है । द्रौपदी के माध्यम से कविने आधुनिक भारतीय नारीत्व की व्यंजना की है जो तेजोमयी है, प्रभावशाली है और अति रमणीय दीप्तिशालीनी भी है । "द्रौपदी भारतीय क्षात्र तेज की जाज्वल्य ज्योति-शिखा है । द्रौपदी एक असामान्य दिव्य प्रतीक है । उसे सामान्य अर्थ में किसी लोकप्रिय उपन्यास की कथा-नायिका नहीं समझना चाहिए । द्रौपदी को पांच पतियों की पत्नी के रुप में हंसी-ठट्ठा की चीज मान लेना, अर्थ का अनर्थ करना है ॥" (२)

धर्म निसन्देह सर्वोपरि महत्व है । किन्तु शक्ति-प्रेरित सत्क्रिया के बिना धर्म भी दैन्य और निर्वासन ही भोगता है । धर्मराज का राजधर्म शक्ति के बिना भला कैसे सार्थक होता । इसलिए धर्मराज के लिए द्रौपदी का बडा महत्व है । द्रौपदी जीवन-शक्ति है, जो युधिष्ठिर (धर्म), भीम (पवन), अर्जुन (अग्नि), नकुल (जल), और सहदेव (धरती) आदि पांच तत्वों को करती है । और उनमें व्याप्त शक्ति को बाहर लाकर दुष्ट आत्माओं के विनाश का कारण बनती है ।

"हो गया बडा पुरुषार्थ,
धर्म से धरा बन गई धन्या ।
संश्लिष्ट हो गए तत्व,
प्रेरणाशक्ति अग्नि की कन्या ।" (३)

पात्रों की प्रतीकात्मकता

द्रौपदी यज्ञकुण्ड से उत्पन्न हुई है और होमज्वाला की शिखा के समान कृष्णवर्ण है, ईसीलिए वह होमकुमारे और 'कृष्णा' के नाम से भी लोकप्रसिद्ध रही है । सनातन जीवन शक्तिरुपा द्रौपदी नर की कूलवधू है । यह अपनी प्रचंड देप्ति और अमोघ प्रेरणा के कारण कृत्या के रुप में उल्लिखित है । नारायणी द्रौपदी के प्रेरणा से जो पांच महातत्व परस्पर संश्लिष्ट हुए और अपनी शक्ति का परिचय दिया, उससे युधिष्ठिर रुप आकाश तत्व सर्वोपरि है । पांचो भाईयों में युधिष्ठिर सुख-दु:ख, राग-द्वेष, लेन-देन, संग्रह-त्याग और जय-पराजय की लौकिक भावनाओं से अछूते है । युधिष्ठिर निर्विकार निर्मल स्वभाव और धूत में उनके व्यसन का भी यही विशिष्ट रहस्य है । तद्रुप धरती के धूसर रागद्वेष से मलिन धरातल पर आकाश उतरना नहीं चाहता । युधिष्ठिर भीम और अन्य पात्रों की प्रेरणा पाकर भी पार्थिव वासनाओं की उपलब्धि के लिए जो यत्नशील नहीं होता, उसका भी यही रहस्य है । आकाश विराट और उन्नत है और वर्गागंधहीन भी है, पर धरती तो स्थूल है और गंधमधुरा भी है पर उसकी विराटता के प्रसार की सम्भावना ही क्या है? न्यायदर्शन के अनुसार आकाश का गुण शब्द नाद है ।

युधिष्ठिर की पताका पर मृदंग का चिह्न अंकित था, जो शब्दनाद के प्रतीक के रुप में प्रधुवत होता रहा है। आकाश तत्व रुप युधिष्टिर ने ही यक्ष के प्रश्नों के समाधान के रुप में जीवन के चरम सत्यों का उद्घाटन किया है । आकाश व्यापक तत्व है, शेष वायु, अग्नि एवं जल-थल तत्वों का वह आधारभूत तत्व है । अतएव भीम (पवन), अर्जुन (ईन्द्र, अग्नि), नकुल (जल) और सहदेव (धरती) युधिष्ठिर के अनुचर हैं और उनके आदेशों का अनुसरण करते हैं ।

रामायण के हनुमान की तरह महाभारत के भीम पवन से संम्बन्धित है । तद्रुरुप उनमें अतुल बल-विक्रम है । हनुमान की तरह ही युद्ध एवं व्यक्तिगत शौर्य-प्रदर्शन के अवसरों पर वृक्षों को उखाडकर शत्रुओं पर प्रहार कर विजयी होते गये । पवन को रौद्ररुप क्या तहस-नहस नहीं कर देता । स्वभावत: विवेकहीन बल-विक्रम संसार में कभी-कभी भयानक अनर्थ भी कर बैठता है । भीम अन्य पांडवों के मुकाबले सरल प्रकृति के है । द्रौपदी की प्रेरणा से कौरवों के विरोध में सबसे अधिक उत्तेजना उन्हीं के मन में उत्पन्न होती है ।

अर्जुन का आर्यो के देवता इन्द्र से निकट सम्बन्ध है । धास्क मुनि के अनुसार धरती की अग्नि और स्वर्ग के इन्द्र दोनों ही एक तत्व के दो रुप हैं । अर्जुन के प्रति ईन्द्र का आकर्षण और उसकी लक्ष्यसिद्धि में इन्द्र द्वारा कर्ण से स्वर्ण कुंडलों की भिक्षा की अनेक कथाएँ अर्जुन के इन्द्र प्रभावित विशिष्ट व्यक्ति का संकेत करती है । आग्नेय अर्जुन ने ही होमकुमारी द्रौपदी पर विजय पायी थी । सम्भवत: इसके मूल में भी अग्नि के तेज की ही महिमा है क्योंकि सामाजिक आचार-विचार परंपरा के संदर्भ में कर्ण अवैध और प्राकृत था और अर्जुन पांडु-कुन्ती की वैद्य संतान होने से संस्कृत था । प्राकृत पर संस्कृत की सदा विजय होती आई है ।

नकुल जलीय तत्व से सम्बद्ध है । अश्वजल का प्रतीक है । महाभारत के अनुसार नकुल अश्वप्रिया पारंगत एवं अति सुंदर श्यामवर्ण के थे । सहदेव सर्वसहा धरती के समान संकोची, सहनशील और शीलवान थे । कुन्ती इन मातृ विहीन माद्री पुत्रों के लिए विशेषरुप से स्नेह रखती थी । पांच सृष्टि-तत्वों में आकाश, वायु और अग्नि अधिक प्रभावशाली तत्व है, जल-थल उसकी अपेक्षा निम्न स्तरीय है ।

महाभारत में धृतराष्ट्र के शतपुत्र उसकी अंध-नग्न वासनाओं के प्रतीक हैं । विवेकहीन मनुष्य़ का पतन और पराभव होता है । धृतराष्ट्र की अन्य विवेकहीन कामनाएँ उनके शतपुत्रों के रुप में उदित हुई और कौरवों के भयानक सर्वनाश का कारण बनी ।

"जो कर न सके धृतराष्ट्र, रही जिसके करने की इच्छा ।
सूत वही वासना-बीज, दबा पाई जिसको न अनिच्छा ।" (४)

वस्तुत: एक और पांचो पांडव दैवी शक्तियों के प्रतीक हैं तो दूसरी ओर दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के शतपुत्र आसुरी शक्ति के प्रतीक हैं । महाभारत में शकुनि सर्वनाश का प्रतीक है । शकुनि द्वारा रचाये गए कुचक्रों और दुर्भावनाओं ने कभी पांडवों और कौरवों को साथ-साथ नहीं आने दिया । शकुनि ने अपनी दुष्टतापूर्ण दुरभिसंधियों के कारण महाभारत के युद्ध का विनाशकारी बीज बोया तथा दूर्योधन को अपनी कुचालों का

मोहरा बनाया । क्योंकि यदि ऐसा ना होता तो कौरवों का नाश करने का उसकी प्रतिज्ञा विफल हो जाती। यद्यपि वह गांधारी का सहोदर भाई है, पर दोनों के आचार-विचार में भारी विषमता है । गांधारी और शकुनी सृष्टि के दो विरोधी तत्वों के प्रतीक हैं जिनके योग से ही सृष्टि की प्रक्रिया चलती है । ये दोनों ही विचार-दर्शन के स्तर पर सत-रज और तम के प्रतीक है ।

सूर्यपुत्र कर्ण तेजस्विता के प्रतीक है । अवैद्य होने के कारण सदा ही समाज से तिरस्कृत कर्ण दूर्योधन के सखा बन जाते हैं । महाभारत में कर्ण ही एक ऐसे पात्र है जो महादानी तथा महाशूरवीर है, किन्तु बुरी ताकतों के साथ देने के कारण उन्होंने अपनी गरिमा को धूमिल कर लिया । ओजस्वि होने के बावजूद दूर्योधन जैसे अंधेरे के दास बन गये ।

महाभारत की कथा को कविने प्रतीक पद्धति से अपनाते हुए अपने आध्यात्मिक द्रष्टिकोण को प्रस्तुत किया है । महाभारत कथा मानवजीवन के शाश्वत सत्य का उद्घाटन करती है । काम-क्रोध, सुख-दु:ख, दैवीय-आसुरी भावनाओं से युक्त मानवों की रोचक कथा ही महाभारत कथा नहीं है, अपितु इसमें हमें बहुत से प्रतीक प्राप्त होते है । द्रौपदी के माध्यम से नारी जीवन शक्ति की बात कही है । द्रौपदी आधुनिक नारी जीवन शक्ति की शाश्वत प्रतीक है, जो विश्वात्मा रुप में अनादि काल से पुरुष को प्रेरित करती आयी है । आत्मदीप्ति का विकास करके ही मनुष्य संसार में सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा कर सकता है ।

संदर्भ

1. द्रौपदी – नरेन्द्र शर्मा, राजकमल प्रकाशन, भूमिका, पृ.११
2. वही, पृ.१३
3. द्रौपदी - नरेन्द्र शर्मा, राजकमल प्रकाशन, सर्ग-२, पृ.३७
4. वही, पृ.३९